जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 29 संख्याः 281 प्रभात उदयपुर, शनिवार 13 अगस्त, 2022 आर.जे. 7202 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

टाइगर प्रेमियों के लिए एक बड़ी अच्छी खबर है। इन्टरनैशनल यूनियन फॉर कंज़र्वेशन ऑफ नेचर की नवीनतम रिपोर्ट में बताया गया है कि टाइगर की आबादी गत सात वर्ष में 40 प्रतिशत तक बढ़ी है। वर्ष 2015 में 3,200 टाइगर थे और 2022 में संभवतया 4,500 टाइगर हैं। वन्यजीव संगठन पैंथेरा के अनुसार, विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी प्रजाति के लिए यह एक महत्वपूर्ण टर्निंग पॉइन्ट है। वर्ष 1968 के बाद से कुछ वर्षों के अन्तराल पर टाइगर की स्थिति का आकलन किया जाता है क्योंकि यह जीव लगातार ''एन्डेजर्ड'' बना हुआ है। नवीनतम रिपोर्ट में भी हालांकि, टाइगर एन्डेन्जर्ड ही है, पर इसकी स्थिति बेहतर है। पैंथेरा संगठन में टाइगर प्रोग्राम के डिप्टी डायरैक्टर अभिषेक हरिहर ने कहा कि, इस बार की रिपोर्ट के अनुसार टाइगर की आबादी पूर्व के अनुमान से अधिक है। वर्ष 2010 में शुरु हुए ग्लोबल टाइगर रिकवरी प्रोग्राम के प्रति कई सरकारें कृतसंकल्प हैं। इस प्रोग्राम का लक्ष्य था टाइगर की आबादी में कमी के रुझान को पलटना और वर्ष 2022 तक जंगल में बाघ की आबादी को कम से कम 6000 पहुंचाना। यह लक्ष्य पूरा नहीं हो सका है। अब इस वर्ष के अंत में, टाइगर रेंज वाले राज्यों के नेताओं व वैज्ञानिकों की मीटिंग होगी जिसमें 12 वर्षीय रिकवरी कार्यक्रम बनाया जाएगा। नए आकलन का अनुमान है कि, एशिया में जंगली बाघ की आबादी 3,725 और 5,578 के बीच है, अर्थात् औसतन, टाइगर की आबादी 4,500 है। इसमें 3,140 अनुमानतः वयस्क हैं। विश्व की कुल टाइगर आबादी का 76 प्रतिशत साउथ एशिया में है। यहां टाइगर की आबादी काफी बढ़ी है, खासकर भारत और नेपाल में। रिपोर्ट कहती है कि, पूर्वोत्तर एशिया में आबादी स्थिर है पर रुस में और चीन में, सीमावर्ती भागों में आबादी बढ़ सकती है। साउथ ईस्ट एशिया में कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम में हालात खराब हैं। वैज्ञानिक कहते हैं, संरक्षण प्रयास जारी रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि टाइगर अभी भी एन्डेन्जर्ड हैं। पैंथेरा के चीफ साइन्टिस्ट, जॉन गुडरिक कहते हैं कि, उन्हें उम्मीद है कि अगले एसैसमैंट तक स्थिति बेहतर होगी और टाइगर को ''वल्नरेबल'' वर्ग में रख दिया जाएगा।

पं. नेहरू ने 14 अगस्त 1947 को हिन्दुस्तान टाइम्स को भारतीय तिरंगे पर पत्र लिखा था

पत्र में तिरंगे के बारे में लिखी बातें तो सार्थक हैं ही, पर पत्र ने यह भी दर्शाया कि तिरंगे का डिज़ाइन कोई आकस्मिक प्रेरणा का नतीजा नहीं था, बल्कि काफी सोच, चिंतन व आशा पर आधारित था

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। कांग्रेस ने शुक्रवार को जवाहर लाल नेहरू का वह पत्र जारी किया, जो उन्होंने भारतीय राष्ट्र ध्वज पर 75 साल पहले हिन्दुस्तान टाइम्स के तत्कालीन संपादक देवदास गांधी को लिखा था। पत्र इस प्रकार है:

मैंने वे बहुत सारे पत्र पढ़े हैं जो ''ध्वज के लिये धन्यवाद'' फीचर के अन्तर्गत हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित हुये हैं। मैं ध्वज की ''डिजायन'' की किसी आलोचना से संतुष्ट नहीं हूँ तथा मैं यह मानता हूँ कि यह ध्वज, जिस रूप में स्वीकार हुआ है, सफलतापूर्वक उन चीजों का कलात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप से प्रतिनिधित्व करता है, जिनका प्रतिनिधित्व करना इसका उद्देश्य है।

यह ध्वज कुल मिलाकर एक प्रतीक है। तीन रंगों तथा चरखा वाला हमारा झंडा सालों तक हमारे लिये स्वतंत्रता एवं एकता के साथ ही भारत की श्रमजीवी जनता का प्रतीक रहा है। इसके इर्द-गिर्द जो भावना एवं प्रतीकात्मकता बन गई है, उसके प्रति हिंसक हुये बिना, इस झंडे के मूलस्वरूप को जरा सा भी बदलना हमारे लिये पूरी तरह असंभव होता। यह झंडा मूलतः बहुत सजग सोच-विचार के बाद अपनाया गया था, तथा मेरे विचार से इसके रंगों का चयन तथा व्यवस्था बहुत कलात्मक तथा सुंदर थी तथा है। चरखा इस झंडे में भावना, परिकल्पना एवं संकल्पना की एक खास खूबसूरती जो जोड़ता है। चूँकि अब झंडे पर पूरा चरखा नहीं है तो यह नहीं मान लिया जाना चाहिये कि हमने चरखे को या इसमें निहित भाव को त्याग दिया है। संविधान सभा के प्रस्ताव में, यह साफ तौर पर कहा गया था कि इसके केन्द्र में बना हुआ चक्र चरखे का प्रतिनिधित्व करता है। यह (चक्र) वस्तुतः उस विचार के प्रति कुछ और अधिक व्यवहार्य एवं कलात्मक है, जो झंडे के लिये ज्यादा उपयुक्त एवं अनुकूल था, की निरन्तरता

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **एक बात और उजागर की पं. नेहरू के पत्र ने कि, उस दौर के राजनीतिज्ञ काफी सोचते थे, मौलिक सोच रखते थे। केवल नारेबाजी तक सोच व चिंतन सीमित नहीं था।**
- **स्वतंत्रता दिवस पर, अगर अब हम स्वतंत्र होने की बात करें तो, नारे बाजी से स्वतंत्रता दिलाने की भगवान से प्रार्थना करें। उदाहरण के लिये राज्य के मु.मंत्री ने बड़े जोश व असरदार तरीके से कहा कि, बलात्कार के बाद मृत्युदण्ड देने की नयी व्यवस्था के कारण महिलाओं की हत्या के आंकड़ों में भारी वृद्धि हुई। यह उद्घोष आंकड़ों से कतई प्रमाणित नहीं होता है और ना ही समझ में आता है। भगवान स्वतंत्रता दिलाये ''जिम्मेवार'' नेताओं के गैर जिम्मेवाराना दावों से, क्योंकि, अगर सोच तथ्यों पर आधारित नहीं है तो, उसको प्रचारित करने का क्या मतलब। अभिप्राय केवल जनता का ध्यान आकर्षित करना है, तो किसी रीति नीति के अपेक्षा कैसे करें प्रशासन से।**

दिल के टुकड़े हज़ार हुए!

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। ''धर्मनिरपेक्ष खेमे'' में नीतीश कुमार की वापसी के साथ भूतपूर्व जनता पार्टी के इधर-उधर बिखरे पड़े सोशलिस्ट

- **पुराने सोशलिस्ट नीतीश कुमार के ''शुद्ध'' मु.मंत्री बनने के बाद, इधर-उधर बिखरे पड़े सोशलिस्ट नेताओं में एक होने का सपना जागा, जिससे विपक्ष की राजनीति में 2024 के चुनाव से पहले एक होकर सत्ता में आने का प्रयास सजीव हो सके। एक होने की यह प्रक्रिया सभी राज्यों में शुरू हो गयी है या शीघ्र हो जायेगी।**

नेताओं में एक होने का सपना जगा है और इन नेताओं ने एक व्यावहारिक एकता गढ़ने के प्रयास शुरू कर दिए गए हैं। जहाँ, नीतीश कुमार ने, स्वयं इंकार कर दिया है कि, 2024 के लोकसभा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'नीतीश प्र.मंत्री बनने की स्पर्धा में नहीं हैं'

उनकी पार्टी के अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह ने साथ में यह भी जोड़ा, पर नीतीश में सफल प्र.मंत्री बनने के सब गुण मौजूद हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। बिहार में भाजपा के साथ बने गठबंधन से बाहर आकर मोदी-शाह की जोड़ी को मात देने के बाद, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज इस बात को दोहराया कि प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा ''उनके मन पर हावी नहीं है।'' उन्होंने कहा कि ''हम हर व्यक्ति को साथ लेने की दिशा में काम करेंगे।''

लेकिन जब उनसे पूछा गया कि असम्बद्ध विपक्षी दलों में एकजुटता लाने की प्रक्रिया में वे अपने लिये क्या भूमिका लेकर चल रहे हैं, तो कुमार ने कहा, ''हमारी भूमिका सकारात्मक होगी। मेरी इच्छा है कि (भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. के विरूद्ध) सभी दल एकजुट हों। आने वाले दिनों में, आप (इस दिशा में) कुछ होता हुआ देखेंगे।''

10 अगस्त को आठवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, नीतीश कुमार ने अगले लोकसभा चुनावों को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कटाक्ष किया: ''वे 2014 में तो जीत गये थे, लेकिन क्या वे 2024 में जीत पाएंगे? उन्होंने पत्रकारों से उस समय भी कह दिया था कि वे ''किसी चीज के दावेदार नहीं हैं,'' जब उनसे पूछा गया था कि क्या वे प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार बनना चाहते हैं। उन्होंने कहा ,''प्रश्न तो यह पूछा जाना चाहिये कि क्या वह व्यक्ति, जो 2014 में आया (जीता) था, 2024 में जीत जायेगा।''

इस विषय में दोबारा प्रश्न किये जाने पर उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, ''यह मेरे मन में नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या कहते है, भले ही मेरे नज़दीकी लोग ऐसा क्यों न कहते हों।'' उन्होंने आगे कहा कि बड़ा काम यह होगा कि सभी विपक्षी दल एकजुट हो जायें और उनका काम इस स्थिति को सुनिश्चित करना है।

लेकिन जब उनसे पूछा गया कि बिखरे हुये विपक्षी दलों में एकता स्थापित करने में, वे अपनी क्या भूमिका मानते हैं तो कुमार ने कहा, ''हमारी भूमिका सकारात्मक होगी। मेरे पास बहुत से फोन कॉल आ रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि (भाजपा के नेतृत्व वाले एन.डी.ए. के खिलाफ) सभी (दल) एक हो जायें। आप आने वाले दिनों में (इस दिशा में) कुछ होता देखेंगे।''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **नीतीश कुमार ने यह भी कहा कि, दो चार दिन में संपूर्ण विपक्ष को एक साथ जोड़ने की दिशा में ''एक्शन'' दिखेगा।**
- **उन्होंने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा कि, यह भी सच है कि कुछ लोगों को आदत पड़ गयी है, केन्द्रीय एजेंसियों का दुरूपयोग करने की, पर उन्हें याद रखना चाहिये कि, जनता उनकी हर हरकत पर निगाह रखे हुए हैं।**

सफल कूटनीति

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। चीन की निरन्तर सैन्य कवायद ताइवान को डराकर रोक नहीं पाई है। न्यूयार्क टाइम्स का कहना है कि वस्तुतः इन सैन्य

- **ताइवान ने दो महाशक्तियों, अमेरिका व चीन की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के बीच संतुलन का, बीच का रास्ता निकाला। अमेरिका हथियार देने को तैयार, चीन ने केवल डराने के स्तर तक ही अपना विरोध सीमित रखा, ताइवान ने कूटनीतिक जीत का ढिंढोरा नहीं पीटा, क्योंकि चीन इससे उत्तेजित होकर और भारी बमबारी करता।**

कवायदों से उसके कूटनीतिक, आर्थिक तथा युद्धाभ्यास की महत्ता में इस

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रूस भारतीय रूपये को रिज़र्व करैंसी के रूप में काम में लेना चाहता है

रूस के पास 600 खरब डॉलर का विदेशी मुद्रा का रिज़र्व है। पर, अमेरिका व यूरोप के आर्थिक प्रतिबंधों के कारण, इस संकट के समय में इस राशि का कुछ उपयोग नहीं कर पा रहा है रूस

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। रुस अपने वैश्विक लेनदेनों में लगातार पाबन्दियां लागू करने से हताश है और बताया जाता है कि वह अमेरिकी डॉलर्स की अपेक्षा अन्य वित्तीय सम्पत्तियां खरीदने की योजना बना रहा है। उसकी नई बॉस्केट में भारतीय रुपया आधारित सम्पत्तियां भी हैं।

पश्चिमी देशों द्वारा रुस पर लगाए गए व्यापक आर्थिक प्रतिबंधों के बाद इस देश ने अपने विदेशी मुद्रा भण्डार के पोर्टफोलियो को शिफ्ट करने का निर्णय लिया है। रुस के पास युद्ध के लिए 6 सौ बिलियन डॉलर का भण्डार था, यद्यपि इस देश द्वारा गत 24 फरवरी को युद्ध की शुरुआत किए जाने के बाद अमेरिका विदेशों में जमा इसके धन को फ्रीज़ कर चुका है।

फ्रीज़ किए जाने तक रुस अपनी सरप्लस विदेशी मुद्रा को अधिकांशतः डॉलर परिसम्पत्तियों के रुप में ही रखता था। अपने खुद के धन के फ्रीज़ हो जाने और संकट के समय इसके स्वयं के पास उपलब्ध ना होने के अनुभव ने रुस के विशेषज्ञों को यह पक्का विश्वास दिला दिया कि जहां तक संभव हो डॉलर को डम्प कर दिया जाना चाहिए।

वित्तीय विशेषज्ञों के पास उपलब्ध एक आंतरिक दस्तावेज में रुस कहता है कि उसे युआन, रुपया और यहां तक कि टर्की के लीरा की कुछ होल्डिंग्स करने की जरुरत पड़ेगी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **रूस के समक्ष अब केवल तीन विकल्प हैं, विदेशी मुद्रा का अपना भण्डार या तो चीन की मुद्रा यूआन, भारतीय मुद्रा रूपया, या टर्की की मुद्रा लीरा में रखे।**
- **युआन सबसे ज्यादा माफिक आती रूस को क्योंकि चीन रूस का सबसे बड़ा पर ट्रेडिंग पार्टनर है, पर युआन पर चीन की सरकार का काफी बड़ा नियंत्रण है, अतः इस मुद्रा में पूरा विदेश मुद्रा का भण्डार ज्यादा सुरक्षित नहीं है।**
- **भारत की मुद्रा भी ज्यादा स्थिर नहीं, इसकी कीमत घटती जा रही है, पर विदेशी मुद्रा का भण्डार रूपये में रखना, इतना जोखिम का काम नहीं।**
- **पर टर्की, हालांकि उद्योग व व्यापार की दृष्टि से बढ़ रहा है, लेकिन उसके राष्ट्रपति की अचानक बेवजह बदलती नीतियां, लीरा के मूल्य स्थिर रखने में बाधक मानी जाती हैं।**

'सुल्ली डील्स'

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को ''सुल्ली डील्स'' केस की जांच पर स्टे ऑर्डर देने से मना कर दिया। ''सुल्ली डील्स'' के रचियता ओंकारेश्वर ठाकुर के खिलाफ कई एफ.आई.आर. दर्ज है।

सुल्ली डील्स ऐप जुलाई 2021 में एक शेयरिंग प्लेटफॉर्म गिटहब पर दिखी थी। इस ऐप में जानी मानी मुस्लिम

- **सुप्रीम कोर्ट ने ''सुल्ली डील्स'' ऐप के खिलाफ जांच रोकने और सभी केसों को क्लब करने से इंकार किया।**

महिलाओं की नीलामी की जाती थी और उनके लिए अपमानजनक शब्द ''सुल्ली'' का प्रयोग किया जाता था, इससे महिलाओं में जोड़-तोड़ कर बनाई गई तस्वीरें अश्लील व अपमानजनक विवरण के साथ लगाई जाती थीं।

वर्तमान केस में सर्वोच्च न्यायालय ठाकुर द्वारा दायर की गई एक याचिका

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

तेलंगाना के मु.मंत्री चन्द्रशेखर राव का परिवार आल्हादित है नीतीश के मु.मंत्री बनने से

चन्द्रशेखर राव का परिवार मानता है कि, प्राचीन काल में नालन्दा ने विश्व को राह दिखायी थी, अब फिर बिहार ने रास्ता दिखाया है भाजपा को परास्त करने का व भाजपा की ''बैक डोर पॉलिटिक्स'' पर नियंत्रण करने का

-लक्ष्मण वेंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। बिहार के मुख्यमंत्री एवं जे.डी. (यू) नेता नीतीश कुमार ही एक मात्र ऐसे नहीं हैं, जिन्हें अपने सहयोगी एवं केन्द्र में सत्तारूढ़ भाजपा से अपने राज्य और खुद की पार्टी को वास्तविक चुनौती मिली है।

क्योंकि भाजपा अब स्वयं को तेलंगाना में मुख्य विपक्षी पार्टी मानती है और इस राज्य को लेकर गंभीरता बरत रही है।

देश के दक्षिण में तेलंगाना के मुख्यमंत्री एवं तेलंगाना राष्ट्र समिति (टी.आर.एस.) के सुप्रीमो के. चन्द्रशेखर राव (के.सी.आर.) ने भाजपा की और उनकी खुद की कीमत पर उनके राज्य में जड़े जमाने को एक खतरे की घंटी की तरह लिया।

अपने दो कार्यकाल में कुछ हद तक सत्ता विरोधी लहर का सामना कर रहे के.सी.आर. पर आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर जिला स्तर के स्थानीय नेताओं सहित भाजपा के कुछ सीनियर नेताओं ने भ्रष्टाचार और वंशवादी राजनीति के दो मुद्दों को लेकर जोरदार हमला किया। तेलंगाना में भाजपा की महत्वकांक्षाएं बहुत ज्यादा हैं और वह वर्ष 2019 के आम चुनावों में जीती गईं चार लोकसभा सीटों की अपनी संख्या को बढ़ाना चाहती है।

दक्षिण भारत में कर्नाटक के अलावा वह तेलंगाना ही है जहां पर भाजपा ने कांग्रेस के पतन को भुनाया है और हाल ही सम्पन्न ग्रेटर हैदराबाद म्यूनिसिपल काउन्सिल चुनावों में उसने शानदार प्रदर्शन किया है। स्वाभाविक ही है कि राज्य के मुख्यमंत्री ने इससे चौकन्ना होकर अपना पूरा बचाव करते हुए प्रधानमंत्री पर सामने से सीधा प्रहार किया है।

हिन्दी बैल्ट के अन्य विपक्षी नेताओं के विपरीत के.सी.आर. को तेलंगाना में जो चीज़ मदद पहुंचाती है वह है राज्य की शेष राजनीतिक पार्टियों और राजनेताओं की भांति एक मजबूत मीडिया संस्थान पर उनका स्वामित्व होना। इसके अतिरिक्त राज्य में सत्तारूढ़ पार्टी के मुख्यमंत्री की हैसियत से उन्हें स्थानीय भाषाई प्रैस पर महत्वपूर्ण बढ़त मिली हुई है जो अपने आप में मायने रखती है और प्रोपेगंडा गेम में भाजपा को मात दे सकती है।

यह एक ऐसी सुविधा है जिससे उत्तर भारत की कई क्षेत्रीय पार्टियां खासकर कांग्रेस, खासतौर पर गुजरात,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **चन्द्रशेखर को एक ''एडवांटेज'' है तेलंगाना में, जो उत्तर भारत में, देश के अन्य भागों में गैर भाजपा मु.मंत्रियों को हासिल नहीं है। चन्द्रशेखर राव तेलंगाना में एक सशक्त ''मीडिया हाऊस'' के मालिक हैं, इससे वे आंकड़ों व नारों से प्र.मंत्री मोदी पर भरपूर आक्रमण कर रहे हैं, जो अन्य राज्यों के मु.मंत्री नहीं कर पाते।**
- **पर, मीडिया विशेषज्ञ, संदीप शास्त्री का कहना है कि, बिहार का मॉडल देशभर में हर राज्य में दोहराना संभव नहीं है, क्योंकि हर प्रदेश की राजनीतिक स्थिति व स्वभाव में फर्क है, अतः बिहार में चल गया इसलिए जरूरी नहीं कि, हर जगह चल जायेगा।**
- **शास्त्री का यह भी पुरजोर ढंग से कहना है कि, विपक्ष को भाजपा से लड़ाई, मोदी के व्यक्तित्व व विपक्ष के स्थानीय नेता के व्यक्तित्व के बीच कभी नहीं होने देनी चाहिये, क्योंकि इस मामले में भाजपा व मोदी विपक्ष के किसी भी नेता से मीलों आगे हैं। विपक्ष व भाजपा के बीच संघर्ष मुद्दे, ''प्रॉस्पैक्टिव'' व ''नैरेटिव'' पर आधारित होने चाहिये।**

कांग्रेस की रहस्यमय चुप्पी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अगस्त। जहां सारे विपक्षी दल बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश

- **नीतीश को मु.मंत्री बनाने में सोनिया गांधी की पर्दे के पीछे सबसे अहम् भूमिका रही। पर, अब कांग्रेस ने चुप्पी साध रखी है, शायद इसलिये कि कांग्रेस विरोधी क्षेत्रीय नेताओं (जैसे, ममता, तेलंगाना के चन्द्रशेखर राव आदि) को विपक्ष की एकता तोड़ने का मौका व बहाना न मिल जाये।**

कुमार द्वारा गठित महागठबन्धन के पीछे इकट्ठे हो गये हैं, वहीं उनके द्वारा भारतीय जनता पार्टी को त्याग दिये जाने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)